नैक (NAAC) द्वारा “A” डेग्रेप्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

दीनानाथ की चक्री- प्रेमचंद की परंपरा से जुड़ी कहानियां

रख देती है जैसे यह खुद लेखक ने भोगा हो। पत्रकार बुद्धिराम कहानी मीडिया में दिलों के साथ हो रहे भेदभाव के साथ-साथ मीडिया की दुनिया के न्यूज स्मृति की अदरक्षी परंपरा खोलकर रख देती है। कथाकार संजीव ने अपनी अनुसन्धान तिप्पणियों में कहा कि अशोक बिश्व का पहला कहानी संग्रह दीनानाथ की चक्री की दर के प्रकाशित हुआ है जबकि इसे पहले अन्य चाहिए था यह बीच नयी पंथी आकर स्थापित भी हो चुकी है। उन्होंने दीनानाथ की चक्री कहानी पर बोलते हुए कहा कि यह कहानी परंपरा- दर- परंपरा अनकार्यों को किस तरह कार्यालयित किया जाता है उसका खुलासा बहुत बारिशी से करती है। इस कहानी की एक और विशेषता है कि यह कदम-दर-
कदम ब्रांचलेन लेने की प्रक्रिया और उसके रास्ते में किसी व्यक्ति को कितने तरह के कागज प्रमाण-पत्र देने पड़ते हैं और कितनी शक्ति आती है उसका चित्रण बहुत बारीकी से करती है। पत्रकार बुद्धिराम कहानी के माध्यम से।

एक दलित पत्रकार के बढ़ते लेखक ने मीडिया की दुलिया का विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने विस्तार से कई अन्य कहानियों पर टिप्पणी कर लेखक को बधाई दी। वरिष्ठ कव्याकर महेश कटारे ने यह बताते हुए कि वे
लेखक होने के साथ ही किसान भी हैं आज के गांवों पर अपनी बात रखते हुए बताया कि किस तरह किसान और गांव तबाह हो रहे हैं। प्रवासी कवि और नया जानोदय के संपादकोंलापर मंडलों ने प्रकाशित कहानी संग्रह के लिए लेखक को बधाई दी और भविष्य में जोरदार कहानियों लिखे जाने की उम्मीद की। कार्यक्रम के संचालक और चित्रित पुस्तक कथाकार विशेष भट्ट ने कहा कि ‘पंकज कुमार वुधिराम’ कहानी अशोक मिश्र की आलमकथा लगती है लेकिन इसके बाद में एक दलित पक्ष की पीढ़ी की ताकत बनाने वाले। उन्होंने ‘द्विजेन्द्र’, ‘आंद्रेज़ी वाजी’ और ‘जानलेखन’ कहानी पर अपनी टिप्पणी की। भेंडला से आए प्रवासी कथाकार राजकुमार रामेश ने कहा कि अशोक मिश्र का कहानी संग्रह एक नयी उम्मीद की तरह है। संग्रह की कहानियां पठनीयता के स्तर पर खास प्रभाव छोड़ती है। कथाकार अशोक मिश्र ने अपनी बात रखते हुए कहा कि किस तरह वे हिंदी लघुकथा लेखन से कहानी की दुनिया की तरफ काफी देर से आए। उन्होंने हिंदी कहानी और खुद की रचना प्रक्रिया पर बात की। उन्होंने कहा कि भेंडला लेखक को बधाई दे जाएगा। कथाकार ने कहा कि अपनी बात रखते हुए कहा कि किस तरह वे हिंदी लघुकथा लेखन से कहानी की दुनिया की तरफ काफी देर से आए। उन्होंने बेकार होने से अपनी बात की। उन्होंने द्विजेन्द्र वाजी की रचना प्रक्रिया पर बात की। उन्होंने कहा कि भेंडला की बात को पक्ष की पीढ़ी को यथार्थ बताया। 

कथा आलोचक शंभु गुप्त कहा कि ‘परिशिद्ध’ में कहानी संग्रह में प्रकाशित उनकी टिप्पणी का वाचन प्रदीप विपाठी द्वारा किया गया। इस भेंडला पर पक्ष का कुलाप तमुर सिंह, प्रकाश दुधी, ओम भारती, प्रेम भारद्वaj, चालित्य ललित, राजेन्द्र, वेंद्रा रघु, मनोज सिंह, कार्तिक प्रसाद शर्मा, गुणप्रती, वलराम अनंत, प्रदीप विपाठी, देश निम्नीलिपि और अन्य श्रीराम की बायाफी उपस्थिति रहे। इस भेंडला पर प्रदीप विपाठी की पुस्तक कल्पना का पहला दशक का लोकार्पण भी किया गया।